

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए २९ सप्टेंबर से ४ अक्टूबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(४६ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	सप्टेंबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)						ADVISORY
दिनांक	29	30	1	2	3	4	
पंजाब							<p>फसल फलन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। अभी हाल ही की वर्षा से सफेदमक्खी संख्या कम हुई है। कुछ खेतों को छोड़कर सफेद मक्खी तथा जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है। यद्यपि जैसिड की संख्या बढ़ रही है। सफेदमक्खी का प्रकोप भी बढ़ रहा है। कपास फलन का दूसरा दौर तथा सफेदमक्खी संख्या के भी शीर्ष पर पहुँचने की संभावना आगामी सप्ताह तक है। किसानों को आवश्यकतानुसार ब्रूप्रोफेजिन अथवा डाइफेथ्यूरोन का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है। कुछ खेतों में कहीं-कहीं मिलीबग का प्रकोप देखा गया है। हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, जिंद तथा भिवानी जिलों में 3 ग्रेड हानि का पत्तीकुंचन विषाणु का प्रकोप देखा गया है। जीवाणु पत्ती गलन का रोग फसल में नहीं देखा गया है। कुछ खेतों में फूँदजनक पत्ती रोग दर्ज किया गया है। कुछ स्थानों में गॉसीपियम आर्बोरियम देसी कपास में निराई तथा कपास चुनने का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। कई स्थानों पर सिंचाई के बाद आकस्मिक मुरझान की गंभीर समस्या रिकार्ड की गई है। आकस्मिक मुरझान की समस्या से निपटने के लिए कोबाल्ट क्लोराइड 10 पी.पी.एम. (1.0ग्रा./100 लीटर पानी) की दर से छिड़काव करें। खेतों को खरपतवार से मुक्त रखें। कुछ स्थानों में देसी कपास में धब्बेदार गूलर की सूँड़ी का प्रकोप देखा गया है। एक-तिहाई गूलर खुलने के बाद फसल में सिंचाई न करें। सूक्ष्मजीवों के नुकसान से बचाने के लिए भण्डारण से पहले कपास को सुखा लें।</p>
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	
मुक्तसर	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा							
सिरसा	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	
फतेहाबाद	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान							
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा							<p>फसल गूलर विकास तथा परिपक्वता अवस्था में है। रसचूषक कीटों, स्पॉटोप्टेरा तथा गूलर की सूँड़ियों का प्रकोप देखा जा रहा है लेकिन जैसिड की संख्या ही आर्थिक हानि स्तर से ऊपर है। छिटपुट स्थलों पर जीवाणु पत्ती गलन की समस्या दर्ज की गई है। रसचूषक कीटों की रोकथाम के लिए ब्रूप्रोफेजिन अथवा डाइफेथ्यूरोन का फसल पर छिड़काव करें। पौध मुरझान तथा लाल पत्ती रोग की रोकथाम यहीं परिशिष्ट में दी गई सिफारिशों के अनुसार करें। शीर्ष पुष्पन तथा गूलर निर्माण की इस अवस्था में डी.ए.पी. तथा सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव उपज वृद्धि में सहायक होगा।</p>
कोरापुट	4	8	9	22	33	36	
कालाहांडी	0	3	0	4	16	27	
बोलांगीर	0	0	0	0	8	11	
गुजरात							<p>फसल पुष्पन तथा गूलर निर्माण अवस्था में है। जैसिड, फूलकीट तथा सफेदमक्खी जैसे चूषक कीटों की संख्या कुछ खेतों में आर्थिक हानि स्तर से अधिक रिपोर्ट की गई है। इनकी रोकथाम इस परामर्शों में दिए गए उपायों के अनुसार करें। गुलाबी सूँड़ी, चित्तीदार सूँड़ी तथा हेल्मिकोवर्पा के निरीक्षण के लिए फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग किसान भाई जारी रखें।</p> <p>गुलाबी सूँड़ी :- इस सूँड़ी का प्रकोप सितंबर के अंतिम सप्ताह से प्रारंभ होकर अक्टूबर के अंत तक हानि के स्तर पर पहुँचने की संभावना है।</p>
अमरेली	0	0	0	0	0	0	
भावनगर	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	
भरुच	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	

सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	नवंबर-दिसंबर तक यह प्रकोप और बढ़ेगा। इस सूँड़ी के निरीक्षण के लिए किसानों को सलाह दी जाती है कि फसल में 5 से 6 फीरोमोन ट्रेप/हे. लगाएँ। 8 पतंग/ ट्रेप/ रात्री सतत 3 रातों तक पकड़ में आने अथवा सूँड़ियों की संख्या सहित 10% क्षतिग्रस्त गूलर पाए जाने की आर्थिक हानि सीमा स्तर पर पहुँचने पर क्वीनालफोस अथवा थायोडीकार्ब का अक्टूबर में एक छिड़काव तथा पायरेथाइड लेम्बडा-सायहेलोथिन का प्राथमिकता के आधार पर नवंबर में दूसरा छिड़काव करें। थायोडीकार्ब का दूसरी बार छिड़काव न करें अन्यथा लालपत्ती रोग की समस्या बढ़ सकती है। गुलाबी सूँड़ी की रोकथाम के उपाय न करने पर इससे अक्टूबर-नवंबर में भारी नुकसान हो सकता है। अक्टूबर के अंत तक पायरेथाइड का अनुप्रयोग न करें। एक से अधिक कीटनाशक मिश्रणों का प्रयोग बिल्कुल न करें। ऐसा करने से सफेदमक्खी की संख्या बढ़ सकती है। किसान भाई कपास की फसल को दिसंबर तक समाप्त कर दें , इससे आगे न बढ़ाएँ। ऐसा करना गुलाबी सूँड़ी के प्रकोप कम होगा तथा बीटी कपास में गूलर की सूँड़ियों के प्रति बढ़ रही प्रतिरोधकता कम होगी। खेतों की मेढों पर पिछले वर्ष की कपास की सूखी लकड़ियाँ रखी देखी जा रही हैं। इन्हें तुरंत नष्ट कर दें। भण्डारों तथा घरों में रखा कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँड़ी का स्रोत बन सकता है। यदि यह बीज इस सूँड़ी से क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरंत नष्ट कर दें।
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश							
खरगोन	0	0	0	0	0	0	फसल की स्थिति अच्छी है। गर्मियों में बोई गई अगेती फसल फलन अवस्था में है जबकि सामान्य समय पर बोई गई फसल वानस्पतिक अवस्था में है। ना शीकीटों तथा रोगों के प्रकोप की रिपोर्ट नहीं है। रस चूषक कीट आर्थिक हानि सीमा पर पहुँचने पर 2.0% नीम तेल के साबुन (1.0%) में इमल्शन का फसल पर छिड़काव करें। अधिक नत्र तथा रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग न करें।
धार	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र							
नागपुर	0	0	0	0	3	0	मानसूनपूर्व बोई गई कपास गूलर खुलने की अवस्था में है। मानसून कपास गूलर विकास तथा जुलाई की पछेती कपास पुष्पन की आरंभिक अवस्था में है। कुछ क्षेत्रों में 150 मिली. से ज्यादा वर्षा होने पर जिन खेतों में जलमग्नता की स्थिति पैदा हो गई थी उन खेतों में आकस्मिन मुरझान देखी गई है। कपास की सभी प्रजातियों में कली झड़न की समस्या देखी जा रही है। खेत से अतिरिक्त वर्षाजल को तुरंत निकालें। आकस्मिक मुरझान की रोकथाम किसान भाई परिशिष्ट में दिए गए उपायों के अनुसार करें। कलियों के पुनःझड़न को रोकने के लिए फसल पर प्लानोफिक्स 5 मिली.+100ग्राम. यूरिया प्रति 10ली . पानी की दर से छिड़काव करें। एक सप्ताह बाद यह छिड़काव दोहराएँ। बीटी रहित कपास में गूलर की सूँड़ियों की रोकथाम के लिए फ्लूबेंडेमाइड का छिड़काव करें। कुछ स्थलों में जैसिड तथा सफेदमक्खी का प्रकोप देखा गया है। खरपतवार के साथ फसल की प्रतियोगिता को टालने के लिए निराई करें। बीटी कपास के खेतों में सफेदमक्खी की संख्या दिखाई देने पर पीले रंग की चिपक- ट्रेप फसल में लगाएँ। पर्याप्त नमी होने पर इस अवस्था में डी.ए.पी. का अनुपयोग करने से गूलर-धारण तथा उपज बढ़ाने में सहायक होगा। डी.ए.पी. के मृदा अनुपयोग के विकल्प के रूप में 2% यूरिया अथवा 2%डी. ए.पी. का पुष्पन अवस्था में फसल पर छिड़काव करें। गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया और 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। अकोला (61.13%) तथा जालना (53.89%) जिलों में जैसिड का प्रकोप हानि सीमा से ऊपर दर्ज किया गया। चन्द्रपुर (27.63%), नांदेड (14.97%) तथा यवतमाल (10.95%) जिलों में जैसिड
वर्धा	0	0	0	0	3	0	
चंद्रपुर	0	0	0	0	4	6	
यवतमाल	0	0	0	0	0	3	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	0	0	0	0	0	
परभणी	0	0	0	0	0	0	
नांदेड	0	0	0	0	0	0	
बीड	0	0	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	
धुले	0	0	0	0	0	0	
जलगांव	0	0	0	0	0	0	
जालना	0	0	0	0	0	0	
औरंगाबाद	0	0	0	0	0	0	

							का प्रकोप 10 से 30% गांवों में रिकार्ड किया गया। नागपुर (9.82%) , बीड (7.82%) तथा परभणी (7.65%) जिलों के गांवों में जैसिड का प्रकोप अपेक्षाकृत कम दर्ज किया गया। अकोला तथा जालना जिलों में फूलकीट का प्रकोप नाममात्र रहा। अमरावती जिले के 33.80% गांवों में सफेदमक्खी की संख्या आर्थिक हानि के स्तर से अधिक पाई गई। अतः इस जिले में इसकी रोकथाम के उपाय करें। अहमदनगर (34.41% गांवों में), नागपुर (26.33%गांवों में), चन्द्रपुर (25.0% गांवों में), परभणी (14.4% गांवों में), बीड (9.86% गांवों में) तथा धुले जिले के 9.37% गांवों में लालपती रोग की तीव्रता बढ़ती हुई दे खी गई। इस परामर्श के परिशिष्ट में सिफारिश किए गए उपायों द्वारा इस समस्या से निपटें।
तेलंगाना							फसल वानस्पतिक , लघु कली निर्माण , पुष्पन तथा गूलर निर्माण की अवस्थाओं में है। इस परामर्श के परिशिष्ट में दिए गए अंकुरण पश्चात खरपतवारनाशकों का अनुप्रयोग किया जा सकता है। <i>रायजोक्टोनिया</i> गलन तथा दूसरे फफूंदजन्य पत्ती धब्बा रोगों की रोकथाम के लिए प्रोपेकॉजोल @ 1.0मिली./ली. अथवा मेंकोजेब+कार्बोडेजिम 2.0ग्रा./ली. पानी की दर से छिड़काव करें। अधिक तापमान तथा सापेक्षिक आर्द्रता के कारण रस चूषक कीट तथा <i>स्प्योडोप्टेरा</i> का प्रकोप दर्ज किया गया। जैसिड तथा सफेद मक्खी की रोकथाम के लिए परामर्शों में दी गई सिफारिशों के अनुसार उपाय करें। व्यापक क्षेत्रों में वर्षा की संभावना के कारण किसान भाई निचले क्षेत्रों में जलनिकासी का कार्य करें। बेलों की सहायता से खेत में नाली-मेढ भी बनाएं। यूरिया 2.0% अथवा पोटेशियम नाइट्रेट 2.0% का फसल पर छिड़काव करें। इसके साथ ही 25 से 35 किग्रा. यूरिया+15किग्रा. म्यूरेट आफ पोटेश प्रति एकड़ की अतिरिक्त मात्रा फसल को दें। शीर्ष वानस्पतिक तथा प्रारंभिक-मध्य फलन अवस्था में सतत वर्षा होने की स्थिति में कीटनाशक का छिड़काव न करें।
आदिलाबाद	0	3	0	5	13	7	
कारिंगर	0	10	4	7	27	26	
खम्मन	0	13	3	8	23	48	
करीमनगर	0	10	3	7	27	26	
नालगोंडा	0	17	4	10	28	32	
आंध्रप्रदेश							
गुन्टूर	0	14	0	4	7	25	
प्रकासम	0	18	0	9	22	29	
कर्नाटक							
धारवाड	4	0	19	25	12	11	
हवेली	5	4	11	25	7	11	
मैसूर	13	35	22	18	5	0	गुलाबी सूँडी के निरीक्षण के लिए किसान भाई 5-6 फिरोमोन ट्रैप/हे. फसल में लगाएँ। 8 पतंग/ट्रैप/रात्री सतत 3 रातों तक पकड़ में आना अथवा वृद्धिशील सूँडियों की संख्या के साथ 10.0% गूलर हानि की आर्थिक हानि सीमा आने पर क्वीना लफ़ास अथवा थायोडीकार्ब का छिड़काव एक बार अक्टूबर में तथा दूसरा छिड़काव नवंबर में पायरेथाइड विशेषतः लेम्डा-सायहेलोथिन का करें। गूलर झड़न को रोकने के लिए फसल पर कापर आक्सी-क्लोराइड @क3.0ग्रा./ली. तथा स्ट्रैप्टोमाइसिन @ 0.5ग्रा./ली. का छिड़काव करें। देसी तथा गैर बीटी कपास में ग्रे-मिल्ड्यू रोग का प्रकोप रिपोर्ट किया गया है। इसकी रोकथाम के लिए फसल पर कर्बोडेजिम 50डब्ल्यू.पी. @ 1.0ग्रा./ली. की दर से छिड़काव करें। इसके साथ ही 19:19:19: पानी में घुलनशील उर्वरक तथा 1.0% मेगनीशियम सल्फेट का छिड़काव कली झड़न तथा लालपती रोग नियंत्रण के लिए करें। मिज कीट के प्रबंधन के लिए क्यूराक्रान 2मिली./ली. की दर से छिड़काव करें। झड़ी हुई रोगग्रस्त पत्तियों तथा कलियों को इकट्ठा करके नष्ट करके फसल को साफ रखें। भारी वर्षा से कारण उत्पन्न जल भराव के कारण गूलर झड़न रोकने के लिए वर्षाजल निकासी करें।
तमिलनाडू							
पेरंबलुर	15	26	9	18	0	0	फसल वानस्पतिक अवस्था में है। खरपतवारों का प्रकोप फसल में देखा गया है जिसके प्रबंधन के लिए उचित खरपतवारनाशकों का अनुप्रयोग किया गया। चेंपा (एफिड) का प्रकोप आर्थिक हानि सीमा से नीचे दर्ज किया गया। बाविस्टीन @ 750ग्रा./हे. के साथ क्लोरपायरिफोस @ 750मिली./हे. के घोल को तना घुन व जड़ गलन की बचावात्मक रोकथाम के लिए पौधों की जड़ों में डालें। जैसिड, एफिड, सफेदमक्खी
सेलम	13	28	22	28	8	0	
त्रिची	34	18	32	18	4	0	
विरडुनगर	34	13	32	27	14	0	



तथा फूलकीट जैसे रसचूसक कीटों का प्रकोप दर्ज किया गया। रसचूसक कीटों के प्रबंधन के लिए परामर्शी के परिशिष्ट में दिए गए उपाय करें।

आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80
वर्षा मि.मी					

उत्तर भारत:

- फसल अंकुरण चरण (स्टेपलिंग स्टेज) में है।
- इस ऋतु वर्ष के लिए "सी आई सी आर और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों" द्वारा सिफारिश की गई कपास की जल्दी परिपक्व होने वाली बीटी संकर या अगती किस्मों के पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस रोग) के लिए प्रतिरोधी थे इस वर्ष के लिए भी उन्ही किस्मों की सिफारिस की जाती है।
- कपास की देसी किस्मों के पर्ण कुंचन रोग के लिए प्रतिरोधी हैं अतः उत्तर भारत के लिए देसी उन्हीं को किस्मों की जोरदार सिफारिस की जाती है।
- फसल के अवशेषों और आकार में समान कपास के पौधों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए।
- किसान को खरपतवार एवं इतसितके प्रबंधन करने की सलाह दी जाती है।
- थ्रिप्स कीटों का संक्रमण अंकुर स्तर (सीडलिंग स्टेज) पर हो सकता है, लेकिन शायद ही वे कभी आर्थिक नुकसान देय होते हैं चूसक कीट (थ्रिप्स) के संक्रमण की नियमित निगरानी किया जाना चाहिए।
- अनावश्यक कीटनाशक स्प्रे करने से बचें।

मध्य और दक्षिण भारत:

- गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के लिए 15 से 25 जून के बीच इस सीजन में बुवाई आदर्श
- दक्षिण भारत में बुवाई जुलाई से आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए 15
- वर्षा आधारित क्षेत्रों विशेष रूप (बोरानी) से में उच्च घनत्व रोपण प्रणालियों में लकीरों पर बुवाई सबसे अच्छा माना गया है।
- वर्षा सिंचित क्षेत्रों में, बुआई 8 से 10 से. मी. वर्षा के बाद किया जाना चाहिए।
- बीटी कपास की संकर किस्मों को या जल्दी परिपक्व वाली किस्मों को प्राथमिकता देना चाहिए।
- वर्षा आधारित क्षेत्रों में संकर बीटी कपास 90 x 10 से. मी. दूरी पर बोना चाहिए है। इन किस्मों को उच्च घनत्व रोपण प्रणाली में

- गैर बीटी किस्मों-जैसे एके सूरज (सीईसीआर), एनएच 615 (वीएन-एमएयू) परभणी, एकेएच 081 (डॉ. पीडीकेव्ही अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेव्ही राहुरी) जल्दी परिपक्व होते हैं। इसे जून 15 से पहले बोया जाता है तो फसल बालीवर्म एवं सूखा तनाव से बच जाएगा।
- कपासकेगैर बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित करके सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना के साथ 45 सेमीपंक्ति से पंक्ति दूरी तथा सेमी पौधे सेदूरी।
- एक पर एक के बाद 10 पंक्ति पर अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना की एक पंक्ति और कपास दो पंक्ति के साथ अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के खेतों की सीमा में या आसपास अरहर की 2-3 पंक्तियाँ रिफ्रयुजियाके रूप में सेवा करते हैं।
- वीडिसाइड स्टोम्प 30 ईसी या बेसलीन 45ईसी 2.5 lit/ हेक्टर के उपयोग खरपतवार के पूर्व उद्भवरोकने के लिए किया गया हो तो तुरंत हैरो करने से यह छिडकाव प्रभावी रहता है।
- पहली बारिश के बाद खेत खाद (फार्म यार्ड मेन्योर)या गोबर खाद 5से 10 टन प्रति हेक्टर खेतों में डालना चाहिए।
- एजोटोवेक्टर और पीएसबी दोनों का 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में इस्तेमाल पोषकतत्वों के स्थिरीकरण के लिए किया जाना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड (8 ग्रा.), विटावेक्स या थिरम (3 ग्राम.) प्रति किलोग्राम बीज चूसक कीट एवं रोगोंके खिलाफ कपास की किस्मों की रक्षा करेगा।

भाकृअनुप-सीआईसीआर द्वारा सिफारिस की गयी प्रबंधन रणनीतियाँ:

नाशीकीट प्रबंधन

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

- रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी किस्मों/संकरोंका चुनाव करें। रसचूसक कीटोंके लिए प्रतिरोधी बीटी संकरों पर कीटनाशकों के बहुत कम छिडकावों की आवश्यकता होती है।
- रसचूसक कीटों के भक्षक कीटों को बढ़ावा देने के लिए लोबिया या ज्वार या उड़द या सायाबीन की अंतः फसल लें।
- इमिडेक्लोप्रिड @ 7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से बीजोंपचार करें।
- विशेषतः रसचूसक कीटों के लिए सवेदन किस्मों में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग।
- फसल को खरपतवारों से मुक्त रखें और मिलिबग से ग्रस्त पौधों को धीरे- से उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- बुवाई के 30-40 दिनों व 50-60 दिनों बाद फूलकीट , मिरीड बग और दूसरे रस चूसक कीटों के पर्यावरण हितैषी नियंत्रण के लिए इमिडेक्लोप्रिड, डाइमैथोएट या एसिफेट का पौधों के तने पर या पौधों के तने पास मिट्टी में अनुप्रयोग।

ये ना करें:

- फसल के पहले दो महीनों में मित्र कीटों के संरक्षण के लिए रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव को यथा संभव टालें। नैसर्गिक रूप से पाये जाने वाले लाभदायक कीट लेडी बर्ड बीटल, क्रायसोपर्ला, जीकोरिस बग, एफिलिनस उनके शिशु व प्रौढ़, सरफीड मक्खी, मिरीड बग, मकड़ियों आदि का संरक्षण होता है। ये मित्र कीट चेंपा, जेसिड, फूलकीट, मिरीड, सफेद मक्खी तथा मिली बग का कारगर तरीके से नियंत्रण करते हैं।
- लेपिडोप्टेरा आडर के कम हानिकारक नाशिकीटों जैसे पती लपेटक साइलेप्टा डेरोगेटा व अर्धकंडलक एनोमिस फ्लेवा के लिए फसल पर छिड़काव न करें। इन कीटों की इल्लियां कपास को बहुत कम नुकसान पहुंचाती है लेकिन ट्रायकोग्रामा प्रजाति, सिसिरोपा फोरमोसा, एपेंटेलेस प्रजाति जैसे परजीवियों के लिए परपोषी का काम करते हैं।
- भविष्य में चयन दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी कीटनाशक का छिड़काव ना करें।
- एसिटामीप्रिड, इमिडेक्लोप्रिड, क्लोथिएनिडिन व थायोमैथोक्शाम जैसे निओनिकोटिनाइड समूह के कीटनाशकों का फसल पर छिड़काव करने से बचें।
- डब्ल्यूएचओ वर्ग-1 श्रेणी (अति हानिकारक श्रेणी) के कीटनाशकों जैसे फोसफेमिडान, मिथाइल पैराथिओन फोरेट, मोनोक्रोटोफास, डाइक्लोरवास, कार्बोफ्यूरान, मिथोमिल, ट्रिजोफोस, तथा मेटासिस्टोक्स का अनुप्रयोग ना करें।
- सफेद मक्खी के महाप्रकोप से बचने के लिए फिप्रोनिल तथा पायरेथ्रोइड जैसे कीटनाशकों के छिड़काव से बचें।

रसचूसक कीटों का प्रबंधन:

आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल): यदि सफेद मक्खी तथा जेसिड की हानि का स्तर आर्थिक हानि सीमा ग्रेड अर्थात निचली पतियों के मुड़ने और सिकुड़ने तथा किनारों से पीले पड़ना आदि 25% या अधिक पौधों में दिखाई दे तो नीचे दिये गए नियंत्रण उपाय अपनाए:

- अ) नीम तेल 1.0 % + नीबोलीगिरी 5.0% + 0.05-0.1 डिटर्जेंट ।
- आ) वर्टीसीलियम लेकानी @ 10 ग्राम/ प्रति लीटर पानी; अच्छे सूत्रण विश्वसनीय निर्माताओं से ही खरीदें।
- इ) डाइफेन्थियूरोन (50 % 800 ग्राम / हे.)
- ई) फ्लोनिकोमिड 50% 200 ग्राम / हे. या
- उ) बुप्रोफेजीन 25% 200 ग्राम/ हे

पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी प्रभावकारिता और प्रतिरोध से संबंधित कारकों को ध्यान में रखते हुए कीटनाशक जैसे डाइमैथोएट या एसिफेट या इथिओन का भी इस्तेमाल सिर्फ विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

यदि कलियों (स्कवेयर) को मिरीड बग के प्रकोप का आर्थिक नुकसान दिखाई दे तो एसिफेट 75 एसपी या डाइमैथोएट @ एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

गूलर की सूंडियों का प्रबंधन:

गूलर की सूंडियों की नियंत्रण करने में बीटी कपास प्रभावी है।

गैर बीटी कपास के लिए निम्न रणनीति की सिफारिस की जा रही है: अमेरिकन सूंडी (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) द्वारा 50% पौधों पर कलियाँ ग्रस्त होने पर इस आर्थिक हानि स्तर पर निम्न उपाय करें:

- 1) बीटी कपास के फसल पर एचएएनपीबी (HaNPB) का छिड़काव करें , इसके एक सप्ताह बाद 5% निबोली गिरी का छिड़काव करें या गूलर की सूंडियों स्पोडोप्टेरा (तम्बाखू की इल्ली) या सफेद मक्खी के नियन्त्रण के लिए आर्थिक हानि स्तर पर फोसलोन कीटनाशक का प्रयोग करें।
- 2) बुवाई के 70-80 दिनों बाद बीटी रहित कपास पर उपलब्ध होने पर ट्रायकोग्रामा का प्रयोग करें।
- 3) गूलर की सूंडियों , विशेष रूप से , हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा नियन्त्रण के लिए प्रभावी कीटनाशक निम्न है:

क)क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल (कोरजेन)

ख) फ्लुबेनडाइमाइड (फेम)

ग)स्पीनोसेड

घ)इमामेक्टीन बेंजोएट तथा

ङ) इंडोक्साकार्ब

ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले हैं जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त है।

- 4) गुलाबी सूँडी और चित्तिदार सूँडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूँडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी (WP) का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।
- 5) स्पोडोप्टेरा लिटुरा: इस इल्ले के अंड पुंजों को हाथ से एकत्र करें या एसएनपीवी का 500 एल ई/हे. अथवा रिमोन 10 एल ई का 200 मिली अथवा लार्विन 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 6) प्ररोह घुन के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 50 ई सी का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर एसआर फसल पर छिड़काव करें।
- 7) अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा./हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें , मेढों फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिंचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करे या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बेडजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिस होते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थैलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर

छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाए।

एल्टरनेरिया अंगमारी : मेंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव क्रेन।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.) + कापरआक्सीक्लोराइड (1500-2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

खरपतवार उगने के बाद प्रयोग में आने वाले खरपतवारनाशक(50 से 75 ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति है. की दर से)

घासों : क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्साप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपटवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपटवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घासकुल के खरपटवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजर्डलोफोप-इथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबेक इथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपटवारों के लिए पायरीओथियोबेक सोडियम कारगर हैं। अधिक जानकारी के लिए कृषि विश्वविद्यालयों एवं तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।

जलजमाव (वाटर लागिंग)

प्रबंधन:

जलमग्नता प्रबंधन:

कपास की फसल अधिक पानी के लिए संवेदनशील है अधिक वर्षा के कारण देश के मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में जल मग्नता एक समस्या बन सकती है । गहरी काली मृदाओं और पानी की अच्छी निकासी न होने की स्थिति में कपास की फसल जल जमाव से सबसे ज्यादा दुष्प्रभावित होती है। अधिक वर्षा वाली परिस्थितियों में पानी की निकासी के लिए विशेषतः काली मिट्टी वाली खेत में ढलान के साथ साथ पर्याप्त नालियाँ बनाए । बेहतर मृदा नमी संरक्षण के लिए विशेषतः जिन क्षेत्रों में मिमी वर्षा होती है उन क्षेत्रों में मेढ बनाने वाले यंत्र या 900-700 रिजर की सहायता से मेढ व नाली बनाए । इस तकनीक और मेढों पर कपास की बुवाई करने से वर्षा जल का संरक्षण होगा और अतिरिक्त जल खेत से बाहर निकाल जाएगा । यह तकनीक भारी काली मिट्टी में और अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में उपयुक्त है।

खेत के किनारों पर जल निकासी के लिए नालियाँ बनाए। इससे अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकल सकेगा। नाली-मेढ पद्धति (रिजेज) में मेढ के ऊपर तुरंत बुवाई करने की सिफारिस की जाती है। इस पद्धति के उपयोग से भारी वर्षा का फसल पर दुष्प्रभाव नहीं होगा । जलमग्नता से

यदि फसल पीली पड़ जायतो उर्वरकोंका अनुप्रयोग करें। यदि भारी वर्षा की भविष्यवाणी की गई है तो उर्वरकों का अनुप्रयोग टाल दें जिससे सतह पर से उर्वरक बह जाने वाले नुकसान से बचा जा सके।

जलमग्नता के दुष्प्रभाव से फसल को जल्दी उबारने के लिए साप्ताहिक अंतराल में फसल पर 0.5 से 1.0 % डीपीए अथवा 19:19:19: नाइट्रोजन का घुलनशील योग छिड़काव करें।

सामान्य फसल स्वस्थ्य प्रबंधन :

- 1) स्थूल व सूक्ष्मपोषकतत्वों का प्रबंधन बेहतर करें।
मे ग्नेशियम सल्फेट %0.5, यूरिया %2का फसल पर छिड़काव करें। इसके बाद %2डीपीए का छिड़काव क्राय -1 एसी की उचित अभिव्यक्ति तथा लालपत्ती रोग में कमी लाना सुनिश्चित करने के लिए इनका फसल पर छिड़काव करें। मुरझान रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तुरंत 1 % कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा बाबिस्टीन 1 % घोल से पौधों की जड़ के पास की जमीन को तर करने से क्षति पूर्ति हो सकती है।
- 2) लालपत्ती की रोक थाम के लिए 2 % यूरिया, 0.5 % जिंक सल्फेट तथा 2% बोरान का 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव फसल के 90 दिनों के होने पर करें।
- 3) कली और फूलों के धारण के लिए : प्लानोफिक्स 4.5 एसएल (एनएए) हार्मोन @ 21 पीपीएम (7 एमएल प्रति 15 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता		
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबदूर (तमिलनाडु)		
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)		
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. ब्लेज डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबदूर (तमिलनाडु)		
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबदूर (तमिलनाडु)		
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआईसीएसटीआईपी केंद्र)			
वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,	09416325420	cotton@hau.ernet.in

	हिसार-124004 (हरियाणा)		
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldud@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक)	09448861040	yaladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संस्करण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
uanandankar@gmail.com